लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति

अंक-द्वितीय

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)-कोलकाता की पत्रिका

मुख्य संरक्षक

सुपर्णा देब, महानिदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

संरक्षक

तान्या सिंह, निदेशक/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

अजय कुमार, उप-निदेशक/ रिपोर्ट
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

संपादक मंडल

बबन कुमार, वरिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
धीरज कुमार राय, कनिष्ठ अनुवादक, प्रशासन

परामर्शदाता मंडल

सुशील तोपनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
नरेन्द्र कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
राजीव दास, कनिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
नूपुर शॉ, कनिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
जीवन गाईन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, प्रशासन

प्रकाशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाऐं लेखकों के नीजि विचार हैं। प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा रचनाओं के मौलिकता का दायित्व लेखकों की होगी)

संदेश

'अनुभूति' के सभी पाठकों, लेखकों और हिंदी प्रेमियों को पत्रिका के द्वित्तीय – अंक के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाएं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देने में यह पत्रिका एक बड़ा मंच है, जिसके माध्यम से कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान), 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता के सभी सदस्य अपने संगठित प्रयासों से इसे एक नई ऊँचाई प्रदान कर रहे हैं। सरकारी कार्यालयों में चली आ रही अंग्रेजी भाषा को प्रतिस्थापित करने के लिए सरकार की राजभाषा नीति बनी, नियम अधिनियम बने और समय-समय पर आदेश जारी होते रहे हैं। उसी का परिणाम हैं कि आज सरकारी कार्यालयों में काम-काज हिंदी में होने लगा है। लेकिन हमें नियमों-अधिनियमों के जोर पर नहीं, बल्कि हृदय से अपनी भाषा के प्रति प्रेम जगाना जरूरी है। जब तक स्वयं प्रेरित होकर किसी काम को न किया जाए तब तक उसके ठोस परिणाम सामने आने मुश्किल होते हैं। हिंदी भारतीय जन-जीवन एवं संस्कृति की भी भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों की मानें तो भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं में हिंदी विश्व भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हिंदी को स्वीकार कर उसका दैनिक जीवन में उपयोग करें।

मैं पत्रिका के संपादक वर्ग को उनके सराहनीय कार्य के लिए बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि पत्रिका का यह अंक रोचक और लाभप्रद होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सुपर्णा देब
महानिदेशक

संदेश

वार्षिक हिंदी पत्रिका **'अनुभूति'** के द्वित्तीय अंक का प्राकाशन कार्यालय में हिंदी भाषा और साहित्यिक लेखन के प्रति उत्तरोत्तर बढ़ती रुचि एवं लगन का द्योतक है जो कि अत्यंत खुशी और गौरव की बात है।

भाषा संस्कृति तथा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। आज हिंदी भारत की संपर्क भाषा बनने की ओर अग्रसर होने के साथ-साथ विश्व पटल पर भी अपना स्थान बनाने में सफल रही है। सोशल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी हिंदी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। **'अनुभूति'** के इस अंक में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नवीन रचनाओं में अभिव्यक्त उनके विविध दृष्टिकोणों एवं विचारों से यह पत्रिका बहुत ज्ञानवर्धक, रोचक एवं समृद्ध बन गई है।

मैं **'अनुभूति'** को लोकप्रिय तथा स्तरीय बनाए रखने हेतु राजभाषा प्रभाग और इस पत्रिका के प्रकाशन में जुटे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देती हूँ। कोरोना जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी पत्रिका का प्रकाशन जारी रहना राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी निष्ठा और समर्पण को प्रदर्शित करता है। यही निष्ठा और समर्पण हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी मौलिक कृतियों के रूप में आप सभी का अमूल्य साहित्यिक सहयोग मिलता रहेगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए शुभकामनायें और शुभेच्छाएँ।

तान्या सिंह

तान्या सिंह
निदेशक

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान), 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता अपनी पत्रिका **'अनुभूति'** का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रहा है। हिंदी संपर्क भाषा के साथ-साथ प्रभावशाली कामकाज की भाषा बने, इसके लिए सबका चिंतन और सम्मिलित प्रयास जरूरी है।

मुझे आशा है कि **'अनुभूति'** का यह अंक अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करेगा। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका की रचनाएं इसके पाठकों के लिए रोचक एवं लाभप्रद होंगी। पत्रिका के सभी लेखकों और कर्मचारीवृंद को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अजय कुमार
उप-निदेशक

संपादकीय

मनुष्य एक कल्पनाशील प्राणी है। यह कल्पनाशीलता ही मनुष्य को उच्चता प्रदान करती है। यह सदैव अर्थ की खोज करते हुए अपनी मनुष्यता को परिवर्धित एवं संस्कारित करती है। आज संपूर्ण मानव जाति कोरोनावायरस के विकट जानलेवा त्रासदी से ग्रसित है। इस महामारी ने मनुष्य के क्षणिक जीवन बोध को नए सिरे से परिभाषित किया है। इसने यह जताया कि जीवन की क्षणिकता एक अटल सत्य है। मानव जाति पर काल का संकट गहराया हुआ है। किंतु दूसरी ओर अपनी अदम्य जिजीविषा का परिचय देते हुए मनुष्य इस काल बोध को कला बोध में परिवर्तित किया। जहां एक ओर पूरी दुनिया इस जानलेवा वायरस के समूल विनाश के लिए प्रयासरत है वहीं दूसरी ओर मनुष्य अपनी रचनाधर्मिता के जरिए समस्त मानव जाति के साथ संवाद भी स्थापित कर रही है। हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका **'अनुभूति'** अपनी रचनाधर्मिता के साथ जीवन के इस पटल पर आशा की प्रस्तावना करते हुए एक नजराना पेश करती है। छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध महा काव्यात्मक कृति कामायनी की एक बहुत प्रसिद्ध उक्ति है -

उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।
जिसमें अनंत अभिलाषा के, सपने सब जगते रहते हैं।

इस विकट कालखंड ने हर मनुष्य को अपने अंदर झांकने की और अपनी मौलिकता को उजागर करने में सक्षम बनाया। इस सक्षम भावबोध का ही परिणाम है कि **'अनुभूति'** का यह दूसरा अंक अपने विविध भाव, रंग, रस की छटा बिखेर रही है। अपने पहले अंक की तुलना में रचनाओं की बहुलता कार्यालय की समस्त लोगों की रचनाधर्मिता की प्रस्तावना करती है। समस्त कार्यालय कर्मियों की सहभागिता **'अनुभूति'** के इस अंक को जनवादी स्वरूप प्रदान करती है। कार्यालय के समस्त कर्मियों ने अपने अंदर के 'मैं' की पड़ताल की है निरालाजी के शब्दों में कहें तो

"मैंने मैं शैली अपनाई, देखा एक दुखी निज भाई
दःख की छाया पड़ी हृदय में मेरे, झट उमड़ वेदना आई।

अपने हृदय के भावों को सहृदय बनाने की एक सफल कोशिश **'अनुभूति'** के इस अंक में दिखाई देती है। भाव अभिव्यक्ति की कोई एक कसौटी नहीं हो सकती। साहित्य रंग और शब्द की वकालत करती है। अपने सगुण रूप में यह रंग और और शब्द एक सुनहरी और सुरक्षित भविष्य की कल्पना करती है।

'अनुभूति' का यह दूसरा अंक एक ओर शब्दों की छटा बिखेरती हुई कविता, कहानी, संस्मरण के रूप में कागज के पटल पर पसरी हुई है वहीं दूसरी ओर चित्र विद्या की कलात्मकता जीवन की अमूल्यता और सुंदरता को पत्रिका के इस छोटे से कलेवर में विस्तृत करती है। जीवन की महत्ता को वाणी देती है। यही इस पत्रिका की अमरता है। आज के शब्दों में यही इस पत्रिका की प्रतिरक्षा शक्ति है।

आशा करता हूं कि **'अनुभूति'** की यह यात्रा अनवरत जारी रहे। यह पत्रिका जीवन के तमाम आयामों का संस्पर्श करती हुई शिखर की ऊंचाई प्राप्त करे।

बबन कुमार

बबन कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संघ सरकार की राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश	राजीव दास	08
2.	महामारी की पीड़ा	सतीश कुमार	09
3.	मैं बोझ नहीं हूँ	रोहित कुमार	09
4.	ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या	धीरज कुमार राय (अथ श्री महाभारत कथा)	10
5.	उड़ती जिंदगी के कितने ठहराव हैं	निहिर अग्रवाल	10
6.	जिंदगी की कशमकश	अनामिका झा (सुपुत्री विमलेश कुमार)	11
7.	अच्छा करो तो अच्छा मिलेगा	अंजली कुमारी (सुपुत्री तुलसी प्रसाद)	11
8.	राहु-केतु की कहानी	नरेन्द्र कुमार	12
9.	एहसास मेरे पहले इश्क की	शशि रंजन पांडे	13
10.	पुराने दोस्त	रोहित साव	14
11.	सोच का फर्क	बबलू कुमार	14
12.	सत्यनिष्ठा : एक जीवन शैली	रोहित साव	15
13.	जिंदगी	कुणाल कुमार	16
14.	मैं सोचने लगता हूँ	बबलू कुमार	16
15.	बुरे काम का बुरा नतीजा	उदय शंकर कुमार	21
16.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का योगदान	कुणाल कुमार	22
17.	कोरोना और पैदल घर लौटते मजदूर	राम कुमार	23
18.	कुछ यूं मिलना तू मुझसे	अंकित कुमार मल्लिक	24
19.	रोम जल रहा है, नीरो बांसुरी बजा रहा है	धीरज कुमार राय	24
20.	ज्योतिष और कर्मफल का सुनिश्चित सिद्धांत	नरेन्द्र कुमार	25
21.	लड़के	अंकित कुमार मल्लिक	27
22.	युगबोध	सुमन कुमार सिन्हा	28
23.	मोबाईल एक साथी	राजीव दास	28
24.	जबकि जानती हूँ	नुपूर साव	29
25.	धर्म आध्यात्मिकता और मानव जीवन	तुलसी प्रसाद क्रौंच	30
26.	कोरोना-कोरोना	जितेन्द्र कुमार	31
27.	सैनीटाइज़र	संगीता दोलाई	31
28.	शिक्षक दिवस की महत्ता	सुमन कुमार सिन्हा	32

आपके पत्र

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
234/4 ए.जे.सी. बोस रोड, कोलकाता-700 020
फोन: 033-2289/4111/12/13, फैक्स: 033-2289-4060
ई-मेल: bradkolkata@cag.gov.in

Dedicated to Truth in Public Interest

22 JAN 2020

संख्या-हि.अ./1(17)21/2012-13/2015-16/608 दिनांक: 22.01.2020

प्राप्त / Received
Office of Director General of Commercial Audit & Ex-officio Member, Audit Board-I Kolkata-700 001

05 FEB 2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा
तथा पदेन सदस्य लेखा-परीक्षा
बोर्ड-1 का कार्यालय,
1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट,
कोलकाता-700001

विषय: 'अनुभूति' के प्रथम अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई,एतदर्थ धन्यवाद । राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, सूचनापरक व पठनीय है बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है। यह पत्रिका हिंदी राजभाषा के विकास की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका का प्रथम अंक ही बहुत आकर्षक एवं प्रेरणापूर्ण है।

पत्रिका के प्रथम अंक में संकलित श्री राजीव दास जी की रचना 'राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा', श्री नरेंद्र कुमार जी की 'परोपकार की भावना', श्री धीरज कुमार राय जी की 'भाषा की मर्यादा और बाजार', श्री बिमलेश कुमार जी की 'आंतरिक सौंदर्य', सुश्री नुपुर साव जी की 'दे दो पंख सुनहरे दो' एवं जितेंद्र कुमार जी की 'कर्म' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य हेतु बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा./राजभाषा)

134 05/02/2020

पंजीकृत-डाक/शीघ्र-डाक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) गुजरात, राजकोट
Office of the Accountant General (A&E) Gujarat, Rajkot.

हिंदी अनुभाग/पत्रिका/2019-20/63
दिनांक 21.02.2020

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

05 MAR 2020

183 05-03-20

विषय : हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक की प्राप्ति ।

महोदय,

आपका ईमेल दिनांक 06.02.2020 प्राप्त हुआ है। जिसके तहत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक की सॉफ्ट प्रति का अवलोकन किया किया गया। ई-पत्रिका का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायांकन अत्याकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। इसके लिए रचनाकारों को विशेष बधाई। 'अनुभूति' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपकी पत्रिका एक अहम् भूमिका निभाती रहेगी। रहेगी।

'गिरनार' पत्रिका परिवार आपकी पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता है।

शुभकामनाओं सहित ।

भवदीय

(एस.जे. पारेख)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

दूरभाष/Telephone-2225766
2224812

प्राप्त / Received
Office of Director General of Commercial Audit & Ex-officio Member, Audit Board-I Kolkata - 700 001

Tele 2225977
Gram : ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

18 MAR 2020

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका-अनुभाग/(2019-20)
दिनांक 06/03/2020

163 18/03/2020

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा०
महानिदेशक, वाणिज्यक लेखा-परीक्षा तथा पदेन सदस्य
लेखा परीक्षा बोर्ड-1, का कार्यालय, 1, काउन्सिल
हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700001

विषय :- **हिन्दी पत्रिका "अनुभुति" के प्रथम अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।**

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "अनुभुति" के प्रथम अंक की सॉफ्ट कॉपी की प्राप्ति हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का लुक लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री अभिषेक आनंद की रचना "लड़की हूँ ना", श्री विमल कुमार की कविता "बेटी का सपना" एवं श्री रोहित साव की कविता "इंसान बनो" काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

यह उप महालेखाकार महोदय द्वारा अनुमोदित है।

भवदीय,

व०लेखा अधिकारी,
हिन्दी कक्ष

महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.लेप.) का कार्यालय,
ओड़िशा, भुवनेश्वर
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (G&SSA),
ODISHA, BHUBANESWAR

13 MAR 2020

प्राप्त / Received

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2019-20/262 दिनांक- 13.02.2020

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशा.
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड - 1,
1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक की पावती के संबंध में ।.

आपके पत्र सं 753प्रशा./20-5/हिंदी पत्रिका/2018 दिनांक-29.11.2019 के साथ कार्यालय की पत्रिका अनुभूति के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई । एतदर्थ धन्यवाद । यह अत्यंत ही हर्ष की बात है कि आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किए जाने से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक ओर कड़ी जुड़ गई है । और यह सच में गौरव का विषय है कि प्रत्येक कार्यालय द्वारा हिंदी के उत्थान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जा रहा है । पत्रिका के समस्त पृष्ठ गुणवत्ता धारण किए हुए है । पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

Email mabkolkata1@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका " अनुभूति" की पावती ।

From : Uday Pratap Singh <hindicell.kar.ae@cag.gov.in> Mon, Mar 02, 2020 11:07 AM
Subject : विषय- हिंदी पत्रिका " अनुभूति" की पावती ।
To : MAB1KOLKATA <mabkolkata1@cag.gov.in>

<u>महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु</u>

सं. प्र.म.ले.(ले.व.ह)/हिं.क./गृ.पत्रि.पा.प्रे./2019-20/343
दिनांक:02.03.2020

सेवा
में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1
1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट,
कोलकता,700001

विषय- हिंदी पत्रिका " **अनुभूति**" की पावती ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक हिंदी **पत्रिका "अनुभूति"** के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। 'नारी', 'आज के दौर में, ' **खामोशी, 'बेटी का सपना, 'परोपकार की भावना,** आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचानाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।
सधन्यवाद !

भवदीय,

-ह-
(उदय प्रताप सिंह)
हिंदी अधिकारी

2/3/2020

संख्या / No. : mAB-II/A/07-1/2001-02/ 1887
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड-II,
नई दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER, AUDIT BOARD - II, NEW DELHI
दिनांक / DATE 21/02/20

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/प्रशा०
कार्यालय, महानिदेशक वाणिज्यिक लेखा परीक्षा
तथा पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड-I
1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट
कोलकाता-700001

12 MAR 2020

विषय: हिंदी पत्रिका "अनुभूति" के प्रेषण से सम्बंधित।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्राप्त पत्र संख्या 753/प्रशा०/20-5/ही.पत्रि./2018 दिनांक 29.11.2019 के साथ कार्यालय की हिंदी पत्रिका '**अनुभूति**' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ है, धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं, एवं किसी प्रकार का कोई सुझाव वांछित नहीं है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंको के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएं।

प्राप्त / Received

भवदीया
नीरज जैन
वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी(प्रशा०)

4th & 5th Floor, Annexe Building, CAG Office, 10, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi - 110002
Tel. : 011-23230436 Fax : 011-23239433 E-mail : mabnewdelhi2@cag.gov.in

---

12 MAR 2020

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
ओडिशा,भुवनेश्वर

सं-हि.प्र(आ एवं रा क्षे लेप)-पत्रिका-समीक्षा/2019-20/214 **दिनांक:** 03/03/20

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन,
महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा
तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1 का कार्यालय,
1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट
कोलकाता-700001

विषय:- हिन्दी पत्रिका "अनुभूति" की प्रशंसा हेतु।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका "अनुभूति" का प्रथम अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हआ है, तदहेतु धन्यवाद। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। विशेषकर, श्री कमलेश कुमार की कविता "नारी", श्रीमती नुपूर साव की कविता "दे दो पंख सुनहरे दो", श्री जितेन्द्र कुमार की लेख "कर्ज", श्री रोहित साव की कविता "खामोशी" जैसी रचनाएं बहुत पसंद आई है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

प्राप्त / Received

भवदीया,

शुभस्मिता आचार्य

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ

संघ सरकार की राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश

राजीव दास
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों, आदि में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी की गई सूचनाएं/परिपत्र आदि के महत्वपूर्ण अनदेश संक्षेप में निम्न हैः-

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वालो सभी कागजात यथा-संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, सरकारी कागज पत्र, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनज्ञा पत्र, टेंडर नोटिस एवं टेंडर फॉर्म-द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी दोनों) होना चाहिए)।

सामान्य आदेश में सभी प्रकार के ऐसे आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हो और स्थायी प्रकार के हों, को शामिल किया जाता है।

सभी प्रकार के ऐसे आदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, आदि जो सरकारी कर्मचारियों के किसी समूह अथवा विभिन्न समूहों के संबंध में जारी किए गए हों।

सभी प्रकार के ऐसे परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए अथवा सरकारी कर्मचारियों के संबंध में जारी किए गए हों।

राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 का अनुपालन-हिंदी में प्राप्त पत्र, आदि के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं। पत्र चाहे किसी भी कषेत्र से अथवा किसी भी राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार अथवा व्यक्ति से प्राप्त हुए हों। लेखन सामग्री, रबड़ की मोहरें और फॉर्म आदि का द्विभाषीकरण- विदेश स्थित भारतीय कार्यालय सहित सभी मंत्रालयों/विभागों से संबंधित लेखन सामग्री, फॉर्म, मैनुअल, प्रक्रिया साहित्य, पत्र शीर्ष, लिफाफे, रजिस्टरों के नाम, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र, विजिटिंग कार्ड, पहचान पत्र, आदि अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बनाई जाएं। (रबड़ की मोहर के हिंदी अक्षर का आकार अंग्रेजी अक्षर के समान अथवा उससे बड़ा होना चाहिए।)

साइन बोर्ड, सूचना पट्ट, आदि का द्विभाषी/त्रिभाषी प्रयोग-भारत सरकार के 'क'क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साइन बोर्ड, काउंटर बोर्ड, सूचना पट्ट इत्यादि को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रदर्शित करना चाहिए। 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित ऐसे सभी बोर्ड त्रिभाषिक रूप में अर्थात हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा में प्रदर्शित किए जाने चाहिए और तीनों भाषाओं के अक्षरों का आकार समान होना चाहिए।

वाहनों का नाम- वाहनों पर कार्यालयों के नाम अंग्रेजी और हिंदी दोनो भाषाओं में लिखवाए जाएं। हिंदी में नाम ऊपर हो और अंग्रेजी में नीचे।

महामारी की पीड़ा

सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
दुर्गापुर

तरस रहा है कोई यहां किसी से
मिलने के लिए,
नहीं मिल रहा है खाना किसी को
पेट भरने के लिए।

बेचैन है कोई यहां प्रियजन को
दुखी देखते हुए,
बेबस है खुद्दारी भीख लेने पर
मजबूर होते हुए।

दो वक्त की रोटी की मार झेल
पाना आसान नहीं,
महामारी से कैसे जीते यह
कहना आसान नहीं।

वक्त ने जो जमकर अपना चाबुक चलाया है,
वृद्ध, जवान, अमीर, गरीब सब पर अपना कहर बरसाया है।

जीत सकेंगे हम सब मिलकर इस सूक्ष्म विषाणु से,
है उम्मीद उस सवेरे कि जो इस
अंधकार (कोरोना) का नाश करें।

मैं बोझ नहीं हूं

रोहित कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक,
प्रशासन विभाग

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा,
चलते चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा,
अंधेरे से डर लगता है सीने से लगा लो न पापा,
मम्मा तो सो गई,
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा।
स्कूल तो पूरी हो गई है,
अब कॉलेज जाने दो न पापा।
पाल पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा तो मत करो न पापा।
अब डोली में बिठा ही दिया तो,
आँसू मत बहाओ न पापा।
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है,
एक बार मुस्कुराओ न पापा।
आपने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर बोझ नहीं मैं,
दुनिया को समझाओ न पापा।

ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या

(अथ श्री महाभारत कथा)

धीरज कुमार राय
कनिष्ठ अनुवादक

ब्रह्म अनादि, जगत आदि,
ब्रह्म एक, जगत अनेक !
ब्रह्म मुख्य जगत धारा,
ब्रह्म निर्देश, बेहाल पूरा देश !
ब्रह्म वासी, जगत प्रवासी,
ब्रह्म अनलॉक, जगत लॉक !
ब्रह्म प्रॉफिट, जगत लॉस,
ब्रह्म न्याय, जगत अन्याय !
ब्रह्म विभूषण, जगत भूषण,
ब्रह्म राम, जगत एकोहम बहुस्याम !.
ब्रह्म रोजगार, जगत बेरोजगार,
ब्रह्म कथनी, जगत करनी !
ब्रह्म वोकल, जगत लोकल,
ब्रह्म यज्ञ, जगत कर्मकांड !
ब्रह्म धर्म, जगत मम,
ब्रह्म इतिहास, जगत लोक कयास !
ब्रह्म वेद, जगत पुराण,
ब्रह्म कोरोनावायरस, जगत **करुणा रस !**
ब्रह्म रेल, जगत पटरी,
ब्रह्म अखबार, जगत **बेकार !**
ब्रह्म मीडिया, ज**गत आइडिया,**
ब्रह्म कॉपी, जगत **पेस्ट !**
ब्रह्म नेशन, जगत **रिलेशन,**
ब्रह्म सत्ता, जगत **कुकुरमुत्ता !**
ब्रह्म पक्ष, **जगत विपक्ष,**
ब्रह्म अनंत, **और मेरी भावनाएं अनंता .....**

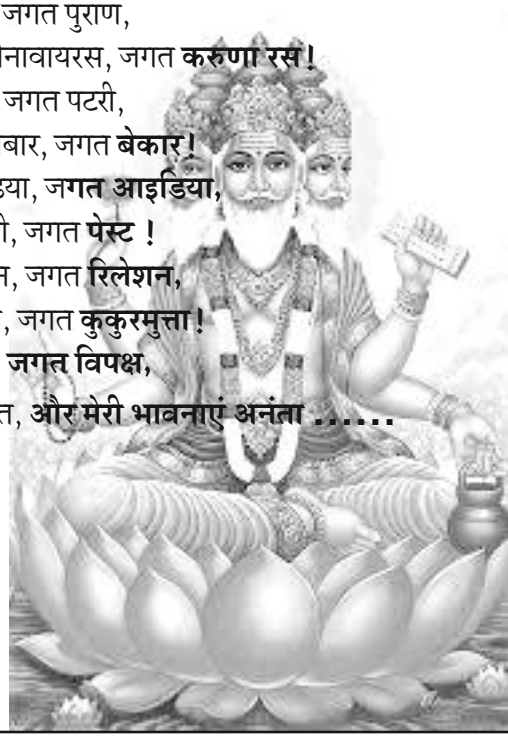

उड़ती जिंदगी के कितने ठहराव हैं

निहिर अग्रवाल
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

उड़ती जिंदगी के न जाने कितने ठहराव हैं,
जब झेलना हमें है, सहना हमें है, लड़ना हमें है,
तो कहना क्यों किसी और से है।
एक ऊंची उड़ान भरने की ख्वाहिश में,
सपनों को साकार करने की जद्दोजहद में,
अपनी गलियों से कितने दूर निकल आए।
पता नहीं चला कि उड़ती जिंदगी के कितने ठहराव हैं।
जिंदगी बंजारों सी चलती रही आज यहां तो कल कहां है,
हम अपना सुख, अपनी खुशी दूसरों में तलाशते हैं,
अपनी ही खुशी के लिए दूसरों के मोहताज हैं।
न कोई सुनने वाला है, न कोई समझने वाला है,
न जाने इस उड़ती जिंदगी के कितने ठहराव हैं।
मुड़ कर पीछे देखता हूं, आज भी बचपन उन्हीं,
गलियों में खेला करता है, वही मां की गोद,
और पिता की डांट में, छिपा प्यार दिखाई देता है।
पर जिंदगी बीत रही है, वक्त के साथ दौड़ जारी है,
क्योंकि न जाने उड़ती जिंदगी के कितने और ठहराव हैं।

जिंदगी की कशमकश

अनामिका झा
सुपुत्री विमलेश कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

कभी-कभी छोटी मोटी आवश्यकताओं के बिना भी जीवन अधूरा सा लगता है, जैसे बिजली पानी आदि इसके अभाव में तो ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन कितना दुरूह और दुभर है।

आज सुबह से ही बिजली की बहुत दिक्कत हो रही है। सुबह से कई बार बिजली आई गई। हमारा इनवर्टर अभी बहुत पुराना हो गया है, तो शायद इसी वजह से ठीक से काम नहीं करता। पर मुझे गर्मी सहन नहीं होती। एक मिनट भी नहीं हुआ होगा बिना पंखे के, तभी एकाएक मेरे मुंह से निकला "इनवर्टर ठीक से काम क्यों नहीं कर सकता"। आश्चर्य की बात है कि एक इनवर्टर अगर सही से काम न करे तो हमारा ध्यान तुरंत उस पर चला जाता है पर हमारे इर्द-गिर्द ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो सही नहीं है और बहुत समय से गलत ही है पर उन पर हमारा ध्यान नहीं जाता।

एक अकेला मनुष्य वास्तविक तौर पर सब कुछ नहीं बदल सकता किंतु सही कार्य करने की एक छोटी सी शुरुआत तो कर सकता है। हो सकता है कि एक दिन में सब कुछ बदल ना पाए पर इसी उम्मीद पर एक न एक दिन गलत सही में परिवर्तित होगा। एक छोटी सी शुरुआत व्यक्ति को प्रेरित कर सकती है।

अच्छा करो तो अच्छा मिलेगा

अंजली कुमारी
सुपुत्री तुलसी प्रसाद
क्रौंचले.प. / डीभीसी

कहा गया है, 'कर भला तो हो भला'। जो लोग दूसरों के साथ भलाई का कार्य करते हैं, उन्हें भी आज नहीं तो कल अच्छे कर्मों का फल किसी न किसी रूप में प्राप्त होता ही हैं। इसके विपरीत बुरा करने वाले को भी बुराई किसी रूप में भोगना पड़ता है। इसलिए भलाई करते हुए हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि उसके बदले में हमे क्या मिलेगा और यह भी न सोचे कि दूसरों ने हमारे साथ बुरा किया तो हम अच्छा क्यों करे। किसी अन्य को ना देखे, हमें सदा नेकी के रास्ते पर चलते रहना चाहिए। यदि हमारे मन में सच्चाई है तो ईर्ष्या, नफरत और बदले की भावना से हमें दूर रहना होगा। जो दिल का सच्चा है उसका कोई कुछ भी नहीं कर सकता। अन्ततः सच्चाई की ही जीत होती हैं। व्यक्ति सच्चा है तो उसके लिए जीवन में सबकुछ अच्छा हैं।

राहु-केतु की कहानी

नरेन्द्र कुमार
सहायक लेखा परीक्षा
अधिकारी प्रशासन

राहु/केतु एक ही राक्षस था जिसका नाम स्वरभानु था। समुद्र मंथन के समय देवताओं को राक्षसों की सहायता लेनी पड़ी और उसके लिए कहा गया कि समुद्र से जो अमृत निकलेगा उसका रसपान राक्षसों को भी कराया जाएगा। अंत में जब अमृत निकला तब एक पंक्ति में देवता तो दूसरी पंक्ति में राक्षसों को बिठाया गया। विष्णु जी जानते थे कि राक्षसों को अमृत पिलाते ही वह अमर हो जाएंगे और फिर अत्यधिक उत्पात मचाएंगे, इसलिए विष्णु भगवान ने मोहिनी का रुप धारण किया और मुस्कुराते हुए देवताओं को अमृत पिलाना शुरु कर दिया साथ ही वह राक्षसों को अपनी मोहिनी मुस्कान से देखते रहे।

स्वरभानु राक्षस को यह समझते देर नहीं लगी कि उन्हें अमृत नहीं पिलाया जाएगा और वह वेष बदलकर चुपके से देवताओं की पंक्ति में जा बैठा। मोहिनी का रूप लिए हुए विष्णु जी ने स्वरभानु के प्याले में भी अमृत उड़ेल दिया और वह प्याले को मुँह से लगाकर पीने लगा, जैसे ही उसने पीना शुरु किया तब तक सूर्य व चंद्रमा ने उसे पहचान लिया कि यह स्वरभानु राक्षस है। विष्णु जी ने तुरंत अपना चक्र स्वरभानु की ओर चला दिया लेकिन जब उसकी गर्दन धड़ से अलग होने लगी तब तक अमृत की कुछ बूँदे उसके गले से नीचे जा चुकी थी। अमृत जाने से स्वरभानु को तो अमर होना ही था लेकिन वह दो भागों में बंट चुका था, एक गर्दन का हिस्सा और दूसरा धड़।

गर्दन से ऊपर का हिस्सा राहु बना और धड़ को केतु का नाम दिया गया तब से यह आसमान में भटक रहे हैं। राहु को सांप का मुँह तो केतु को पूँछ कहा गया है। सूर्य और चंद्रमा ने स्वरभानु को पहचान लिया था इसीलिए इन्हीं दोनों को ग्रहण लगता है। जब भी ग्रहण होता है तब उस दिन ये ग्रह राहु/केतु अक्ष पर होते हैं। इन्हें यह ग्रसित करता है अर्थात निगलता है।

वैसे कहा यह गया है कि सूर्य का जो विस्तारित पथ आसमान में बना हुआ है, उस पथ को जब चंद्रमा का विस्तारित पथ दो बिंदुओं पर काटता है, उन बिंदुओं को राहु तथा केतु कहा गया है। अमृत की कुछ बूंदे गले से नीचे जाने की वजह से केतु को मोक्षकारी ग्रह भी कहा गया है। राहु शरीर का ऊपरी हिस्सा है जो देख तो रहा है लेकिन कुछ कर नहीं पाता है। केतु शरीर का दूसर भाग है जिसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है तो निर्णय कैसे लेगा? इसलिए राह/केतु की दशा में व्यक्ति की बुद्धि भ्रमित सी रहती है। किसी भी काम की स्पष्ट तस्वीर दिखाई नहीं देती हैं। समझते बूझते हुए भी निर्णय गलत हो जाते हैं।

एहसास मेरे पहले इश्क की

शशि पांडे
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
दुर्गापुर

आज कॉलेज का आखिरी दिन था। बड़ी दुविधा में था कि मुझे भी अब इस छात्र जीवन से छुटकारा मिलेगा या उससे दूर होना पड़ेगा। खैर आज थर्ड ईयर का आखरी पेपर था और पेपर भी मैथ का, मतलब भगवान भी हमारी क्लास ले रहे थे। खैर एग्जाम खत्म हुआ, वह रोज की तरह मुझसे मिली और मैं बस यही पूछ पाया कि पेपर कैसा हुआ। किंतु मेरे पूछने के लहजे में एक बिछड़ने जैसा डर का भाव था। जो अचानक से मेरे चेहरे पर आ गया था।

खैर इन सब चीजों को छोड़कर मैं अपने दोस्तों के पास चला गया और उनसे परीक्षा के बारे में पूछने लगा तभी वह मुझे हाथ हिलाते हुए दिखी। अरे वही जिससे बिछड़ने का दुख ज्यादा था और फेल होने का कम। मुझे लगा किसी और को बुला रही होगी परंतु इस बार उसने मेरा नाम लेकर पुकारा, हमें समझते देर न लगी मुझे ही बुलाया गया है। हम भी कॉलर वालर ठीक करके पहुंचे। वह मुझसे बड़ी ही धीमी आवाज में बोली यार मेरा ना बैग बस में छूट गया। मेरा मोबाइल और एडमिट कार्ड सब उसी में था अब क्या होगा कैसे मिलेगा। मैंने सांत्वना देकर कहा अरे यार तुम चिंता मत करो बस में ही छोड़ आई हो न मिल जाएगा। तुम चिंता मत करो मैं अभी देखता हूं। मैं बस के ड्राइवर का नंबर लेने प्रिंसिपल के पास जा रहा था इसी बीच मेरे मन में न जाने कितने सवाल उभरे मैं सोच रहा था यार आखिर में मुझे ही क्यों बुलाई और किसी को भी बुला सकती थी। मेरे प्रति उसके मन में कुछ था या नहीं यह मुझे नहीं मालूम। मगर एक बात थी मेरे चेहरे की हंसी में एक अजीब रंग था जो रंग शायद अब महसूस कर सकते थे। मैंने प्रिंसिपल साहब से नंबर लेकर ड्राइवर से बात की और बैग मुझे मिल गया। बैग देने मैं कैंटीन पहुंचा जहां वह अपनी सहेलियों के साथ बातें कर रही थी। मैंने उसे बुलाया तो वह अकेले आ गई है। सब उसे ऐसे देखने लगे जैसे मैं उससे अपने प्यार का इजहार करने जा रहा हूं। खैर मैंने उसे उसका बैग वापस कर दिया उसने मुझे थैंक्स कहा।

फिर मैं उससे पूछने लगा कि आगे क्या करना है। उसने बताया कि वह पीजी करने के बाद सिविल सर्विस की तैयारी करना चाहती है। अंत में मैंने अपना मोबाइल नंबर उसे दिया और कहा कि कुछ भी मदद चाहिए हो तो अवश्य बताना। और मैं वहां से वापस हॉस्टल की ओर चल पड़ा। रास्ते में मैं यही सोच रहा था कि क्या यह मेरा पहला प्यार था? क्या वह भी मुझसे प्यार करती थी? ऐसे ही कुछ सवालों के साथ मेरे पहले प्यार ने मुझे इश्क का एहसास करवाया।

पुराने दोस्त

रोहित साव
वरिष्ठ लेखा परीक्षक/डीवीसी

चलो कुछ पुराने दोस्तों के
दरवाजे खटखटाते हैं।

देखते हैं उनके पंख थक चुके हैं,
या अभी भी फड़फड़ाते हैं।

हंसते हैं खिलखिलाकर,
या होठ बंद कर मुस्कुराते हैं।

वह बता देते हैं सारी आपबीती,
या सिर्फ सफलताएं सुनाते हैं।

हमारा चेहरा देख,
अपनेपन से मुस्कुराते हैं।

या घड़ी की ओर देखकर,
हमें जाने का वक्त बताते हैं।

चलो कुछ पुराने दोस्तों के
दरवाजे खटखटाते हैं।

सोच का फर्क

बबलू कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

कहते हैं बुरा वक्त सबका आता है,
जिनकी सोच नकारात्मक होती है वे बिखर जाते हैं और
जिनकी सोच सकारात्मक होती है वे निखर जाते हैं...

एक दूसरे के लिए जीने का नाम ही जिंदगी है,
खराब सोच वाले व्यक्ति इस रहस्य को नहीं समझ पाते,
और उनकी जिंदगी में खटास भर जाती है।

सोच का फर्क होता है साहेब,
कोई समुद्र भी लहरें से डर जाता है,
तो कोई उसकी लहरों से खेलता है।

सोच का फर्क होता है साहब,
कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का कर्म देखता है,
तो कोई उसी दूसरे व्यक्ति को उसके नाम से देखता है।

सत्यनिष्ठाः एक जीवन शैली

रोहित साव
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
डीवीसी

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए सत्यनिष्ठा बहुत ही आवश्यक है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सुकून को कोई भी व्यक्ति अपने अंदर विकसित कर सकता है। सत्यनिष्ठा आपकी बातों के साथ-साथ आपके रोजाना के काम में भी दिखनी चाहिए।

आज के संदर्भ में सत्यनिष्ठा को जीवन की शैली बनाना आसान कार्य नही, पर इसे जीवनशैली बनाने वाला हर व्यक्ति सफल है। जैसे सोना आग में तप कर और कसौटी में कस कर अपना खरापन सिद्ध करता है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति समाज में सत्याचरण का प्रमाण देकर ही अपना खरापन सिद्ध करता है। इसका जिक्र हमारे धर्मों में भी है। सत्यनिष्ठा का व्रत अपनाने से ही लोक से परलोक तक दोनों में सच्चे सुख की प्राप्ति होती है।

सत्य की राह पर चलना बड़ा कठिन माना जाता है परंतु कुछ ऐसे महान व्यक्तित्व हैं जिन्होंने इस राह पर चलकर अपना नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों से लिखा है। शासन हो या प्रशासन जहां भी सत्यवृत्त या सत्यनिष्ठा का लोप हुआ वहां यथा राजा तथा प्रजा का नैतिक पतन हो गया। वर्तमान में सत्यनिष्ठा जैसे आभूषण से अलंकृत व्यक्तियों का अकाल सा पड़ा हुआ है।

राष्ट्र के आर्थिक विकास भी हमारी सत्यनिष्ठा पर आधारित है। आज के आर्थिक जगत में आर्थिक मंदी के मूल कारणों में से एक हमारी सत्यनिष्ठा में कमी भी है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों में सत्यनिष्ठा की कमी राष्ट्र के विकास में बाधक है। सरकार के प्रत्येक क्षेत्र में सत्यनिष्ठा जैसे मुद्दे चिंता का विषय बना हुआ है। इसलिए यह बेहद आवश्यक हो गया है कि सभी कर्मचारी निर्दोष आचरण एवं अखंडता को अपने भीतर समाहित करें।

इमानदारी से देश का मान बढ़ जाता है।

जिंदगी

कुणाल कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

शब्द है तू एक, पर हजारों है तेरे नाम जिंदगी।
ना जाने क्यों आज दरबदर हो रही बदनाम जिंदगी।

हर लम्हे में जीना सीखो, हर जख्म को खुद ही सीना सीखो,
कई बार मुसाफिरों को मिल नहीं पाती .....

और जो करना है वह आज ही कर लो यारों,
क्योंकि मौत अक्सर बताकर नहीं आती.....

जिंदगी नहीं, पहेली है यह एक, रंगो की होली है यह एक,
नदियों की लहरों सा बहना, तो कभी सूरज की तेज सा जलना
सीखा जाती है,
और नहीं पता कब..... लेकिन पहेलियों की उत्तर भी खुद बता जाती है।

मंजर हो सकता है बुरा, मंजिल नहीं,
वक्त बुरा हो सकता है, जिंदगी नहीं,
बेखौफ और मुस्कुराहट लिए हुए चेहरे पर,
मौत को देखने का नाम है..... जिंदगी।

मैं सोचने लगता हूँ

बबलू कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

तेज रफ्तार से दौड़ती बसें,
बसों के पीछे भागते लोग,
बच्चों को संभालती औरतें।

सड़क पर इतनी धूल उड़ती है,
कि मुझे कुछ दिखाई नहीं देता,
मैं सोचने लगता हूं...

पुरखे सोचने के लिए आंखें बंद करते थे
मैं आंखें बंद होने पर सोचता हूं

बसे ठिकानों पर क्यों नहीं ठहरती,
लोग लाइनों में क्यों नहीं लगते,
आखिर यह भागदौड़ कब तक चलेगी?

देश की राजधानी में,
संसद के सामने,.
धूल कब तक उड़ेगी?

मेरी आंखें बंद है,
मुझे कुछ दिखाई नहीं देता,
मैं सोचने लगता हूं....

महा निदेशक, वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा
तथा पदेन सदस्य, लेखा-परीक्षा बोर्ड-1 का कार्यालय
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1
द्वारा आयोजित
हिंदी पखवाड़ा

अनुभूति

अनुभूति
अजय कमार

अजय कुमार

अजय कुमार

बुरे काम का बुरा नतीजा

उदय शंकर कुमार
सहायक लेखा परीक्षा
अधिकारी, दुर्गापुर

एक अंधा आदमी था उसका नाम सुरेश था। वह रोज मंदिर के सामने बैठकर फूल बेचा करता और शाम को कमाया हुआ पैसा गांव के बाहर बरगद के पेड़ के कोठार में छुपा देता था। गांव का एक व्यक्ति जिसका नाम मंगू था, उसे पैसे छुपाते हुए देख लेता है और वह सुरेश के पैसों को चोरी कर लेता है। सुरेश को इस बात की भनक लग गई कि मंगू उसके पैसे चोरी कर रहा है क्योंकि गांव में मंगू ठग के रूप में कुख्यात था। एक दिन सुरेश मंगू के घर जाने के लिए निकला लेकिन रास्ते में वह एक दूसरे अंधे से टकरा जाता है। सुरेश को गुस्सा आता है और वह उसे गालियां देने लगता है। दूसरे व्यक्ति ने कहा भाई मैं अंधा हूं, इस कारण वश मैं देख नहीं पाया, मुझे माफ कर दो। सुरेश यह सुनकर शांत हो गया और बोला कि मैं भी अंधा हूं। उसके बाद दोनों में दोस्ती हो गई सुरेश ने उससे उसका नाम पूछा उसने अपना नाम गोपाल बताया। गोपाल ने सुरेश से पूछा क्या हुआ तुम इतने गुस्से में क्यों हो? सुरेश ने मंगू की पूरी कहानी बताई, तो गोपाल ने उसे कहा गुस्सा करने से किसी समस्या का हल नहीं निकलता है। मैं तुम्हें पैसे छुपाने का तरीका बताता हूं। पैसे को पोटली में डालकर मिट्टी के अंदर दबा दो, किसी को क्या पता चलेगा। दोनों ने ऐसा ही किया लेकिन मंगू ने दोनों को ऐसा करते देख लिया, और वह दोनों के पैसों को एक बार फिर चोरी कर लेता है। गोपाल को यह बात पता चलता है तो दोनों को गुस्सा आता है। दोनों मंगू के घर जाते हैं और चिल्लाते हैं, कहां हो मंगू? तू बाहर निकल चोर कहीं के। मंगू डर जाता है परंतु वह बाहर निकलता है और कहता है क्या बात है? दोनों ने कहा हमारा पैसा वापस कर दो। तुम्हें समझ नहीं आया तो हम इस पंचायत में जाएंगे और तुम्हारे खिलाफ शिकायत करेंगे। तब मंगू ने दोनों को समझाया कि मैं तुम्हारे पैसे वापस कर दूंगा लेकिन आज नहीं कल। यह सुनकर वह दोनों चले गए क्योंकि उन दोनों के पास पैसे नहीं थे इसलिए वे लोग वहां एक सेठ के घर कुछ कर्ज मांगने पहुंचे। उसी समय उन दोनों को मंगू को सबक सिखाने की एक युक्ति सूझ गई। उन लोगों ने सेठ का हार चुरा लिया और छुपा दिया। उन लोगों ने सेठ को बताया कि मंगू पर शक है और जरूर उसने चुराया है। सेठ ने अपने आदमी मंगू के पीछे छोड़ दिए। जब मंगू ने कोठार में हाथ डाला और इस बार उसे हार मिला। उसे देखकर मंगू को बहुत प्रसन्नता हुई इतने में वहां सेठ के गुप्तचर आ गए और मंगू रंगे हाथ पकड़ा गया। सेठ ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया तथा दोनों अंधे व्यक्ति को पुरस्कृत किया। इस प्रकार दोनों ने मंगू को अच्छा सबक सिखाया।

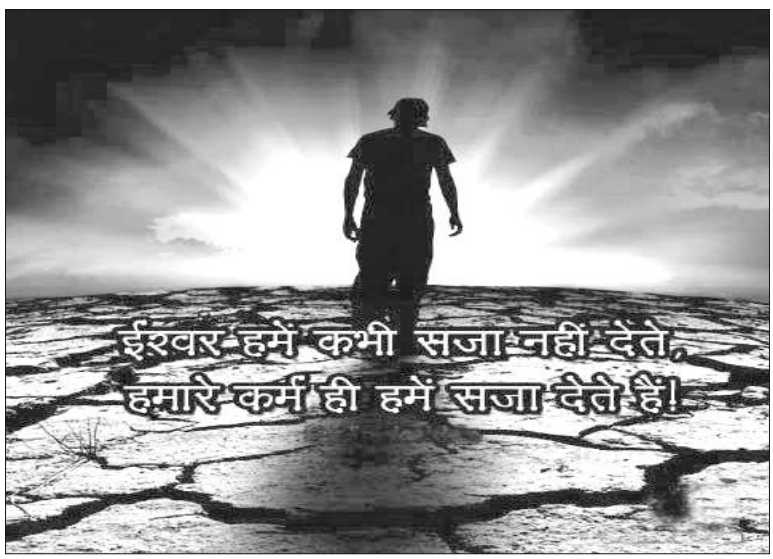

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का योगदान

कुणाल कुमार
सहायक
लेखा परीक्षा अधिकारी

किसी भी देश की पहचान वहां की भाषा व उससे जुड़े साहित्य से होती है तथा इस पहचान के सृजन के पीछे एक लंबी कथा छिपी होती है। भाषा के रूप में भारत एक बेहद समृद्ध राष्ट्र है। यहां की भाषाएं अलग अलग सामाजिक अस्मिताओ के प्रकटीकरण का माध्यम होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से ही सभी एक दूसरे की ताकत है। भाषाओं के इस विविधतापूर्ण परिवेश में हिंदी का एक विशिष्ट स्थान है। यद्यपि हमारे संविधान के निर्माताओं ने 14 सितंबर 1950 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारा है परंतु इसका प्रभाव एवं महत्त्व हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में प्रारंभ से ही परिलक्षित होता है। उत्तर भारत में जहां यह जन जन की संपर्क भाषा के रूप में लोकप्रिय हुई वहीं दक्षिण भारत हिंदी समिति के कार्यकलापों के माध्यम से वहां के लोगों तक पहुँचाई गई तथा उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रशंसनीय प्रयास किया। जब राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी युग का सूत्रपात हुआ तो हिंदी का प्रचार प्रसार धीरे धीरे और बढ़ने लगा। बापू अपनी सभाओं में प्रवचन बहुधा हिंदी में ही दिया करते थे। उनकी यह भी कोशिश थी कि राष्ट्र आंदोलन को गति देने वाले जितने भी आंदोलन हो उसे हिंदी में भी जाना जाए। इसलिए सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जनता के बीच संतुलन स्थापित करने में पूर्ण रूप से सफल रहे।

उनके विचार में हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है क्योंकि राष्ट्रभाषा पद पर आरूढ़ होने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वसाधारण उस भाषा को आसानी से समझ तथा सीख सकें और यह गुण सिर्फ हिंदी में ही है। वह राष्ट्रभाषा को स्वराज्य प्राप्ति का सशक्त माध्यम मानते थे।

अगर हमें एक राष्ट्र होने का अपना दावा सिद्ध करना है तो हमारी अनेक बातें एक सी होनी चाहिए, इस बात पर सहमति है कि यह माध्यम हिंदी ही होना चाहिए। हमारे रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट हमारी देशी भाषाओं की लिपियां है। अगर एक सामान्य लिपि बनाना संभव हो तो एक सामान्य भाषा को पूरा करने के मार्ग की एक बड़ी बाधा दूर हो जाएगी। समूचे हिंदुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए हमें एक भाषा की जरूरत है। यदि हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा होगी तो साहित्य का विस्तार भी राष्ट्रीय होगा। एक लिपि एक भाषा के प्रचार को बहुत आसान कर देगी।

तत्कालीन कवियों, लेखकों, पत्रकारों, नाटककारों यहां तक कि चलचित्रों ने भी हिंदी का भरपूर प्रयोग किया और राष्ट्र आंदोलन को सफल बनाने में योगदान दिया। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता की कड़ी है, सांस्कृतिक सामाजिक सार्वभौम जीवन मूल्यों की आध्यात्मिक शक्ति है। इस प्रकार यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि भारत के स्वाधीनता संघर्ष में हिंदी भाषा का अभूतपूर्व एवं महत्वपूर्ण योगदान है।

कोरोना और पैदल घर लौटते मजदूर

राम कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
डीवीसी सीटीपीएस

बिना वजह घर से निकलने की जरूरत क्या है?
मौत से आंख मिलाने की जरूरत क्या है?
सबको मालूम है बाहर की हवा कातिल है,
यूंही कातिल से उलझने की जरूरत क्या है?

ऊपर की चार पंक्तियां गुजराल साहेब की है अपनी कविता ऊपर दिए गए शीर्षक के संबंध में तथा इन्हीं चार पंक्तियों के संदर्भ में आगे कुछ इस प्रकार है।

आलम यह है कोई नहीं मिलना चाहता तुमसे,
ना यह जानना चाहता कि कौन हो तुम? तुम्हारी सूरत क्या है?
सबको मालूम है बाहर की हवा कातिल है,
यूंही कातिल से उलझने की जरूरत क्या है?

सड़के सुनसान और मैं घर से मीलों दूर,
ना कोई राह बची, भूखे सोने को मजबूर,
पैदल ही चल दिया है घर के लिए,
तुम क्या जानो कि घर जाने की जरूरत क्या है?
सबको मालूम है बाहर की हवा कातिल है।
यूंही कातिल से उलझने की जरूरत क्या है?

चिलचिलाती धूप, सुलगती जमीन, पैर में छाले,
अविरल चले जा रहे हैं, आ पड़ी ऐसी नौबत क्या है?
जो हो बाहर की हवा कातिल हो जाए,
चलता रहूंगा जब तक सांस है, मिलूंगा उसे जो बैठे लगाएं आस है,
तुम क्या जानो घर वालों की परिवार की मोहब्बत क्या है?

कुछ यूँ मिलना तू मुझसे, जैसे शाम मिलता है अंधेरे से...

अंकित कुमार मल्लिक
डाटा एंट्री आपरेटर, प्रशासन

कुछ यूँ मिलना तू मुझसे,जैसे शाम मिलता है अंधेरे से।
कुछ यूँ ठहरना तू मुझपे,जैसे लकीरें ठहरती हैं हथेली पे।
कुछ यूँ घुलना तू मुझमें, जैसे नमक घुलता है सागर में।
कुछ यूँ जुड़ना तू मुझसे,जैसे जड़ें जुड़ती हैं धरा से।
कुछ यूँ सँवरना तू मुझसे,जैसे रात सँवरती है चाँद से।
कुछ यूँ रंगना तू मुझसे, जैसे तितलियाँ रंग जाती हैं फूलों से।
कुछ यूँ खिलना तू मुझमें, जैसे मोर खिलता है सावन में।
कुछ यूँ उतरना तू मुझमें, जैसे सूरज उतरता है क्षितिज में।
कुछ यूँ मिलना तू मुझसे,जैसे शाम मिलता है अंधेरे से।

रोम जल रहा है, नीरो बांसुरी बजा रहा है

धीरज कुमार राय
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

घर जल रहे है, समर्थक ताली थाली बजा रहे हैं।
समाज टूट रहे है, हम टीवी चैनलों में गाल बजा रहे हैं।
मंदिर मस्जिद बंद हैं, हम धर्म सड़क पर ला रहे हैं।
लोग भूखे हैं, हम करोड़ों के पैकेज बांट रहे है।
नैतिकता तडीपार हुई, हम बेशर्म प्रतिनिधि बेच रहे हैं।
बाजार मंद है, हम नमस्ते डॉलर कर रहे हैं।
कस्बे में छाया अंधेरा है, हम मोबाइल और टॉर्च जला रहे हैं।
जीवन में पसरा भय है, हम पटाखे और जय के नारे लगा रहे हैं।
रामराज्य के सपने देख रहे हैं, और लाठिया हड्डियां तोड़ रही है।
सशक्तिकरण की वकालत कर रहे हैं, और शक्ति चीख चीख कर मर रही है।
आपदा में अवसर का मंत्रोच्चारण कर, चुनावी बिगुल बजा रहे हैं।
हताश और बेघर टटोल रहे हैं नब्ज, कहीं दूर नगाड़े बज रहे हैं।
विश्वगुरु बनने का दावा ठोक कर, न जाने हम किस दिशा में जा रहे हैं .....

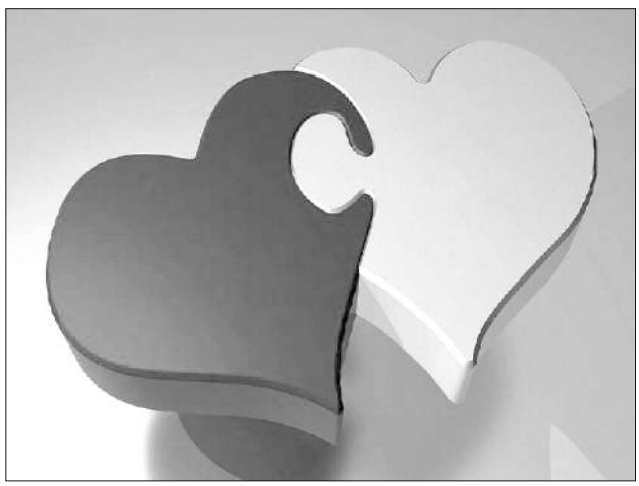

ज्योतिष और कर्मफल का सुनिश्चित सिद्धांत

नरेन्द्र कुमार
सहायक लेखा परीक्षा
अधिकारी प्रशासन

ज्योतिष और कर्मफल का आपसी संबंध बहुत गहरा है। हम सब जानते हैं कि हमारी जिंदगी में होने वाली सभी घटनाएं हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के कारण उसके फलस्वरूप ही घटती है। अर्थात इस जन्म में जो कुछ भी हम भुगतते हैं, वो हमारे पूर्व जन्म के कर्म के फलस्वरूप ही होते हैं।

कर्म क्या है? मूल रूप से 'कर्म' को 'क्रिया' कहते हैं। यानि शरीर, वाणी, और मन से की गयी क्रिया कर्म है एवं इसी 'क्रिया' रूपी 'कर्म' को ध्यान में रखते हुए शास्त्र, वेद, गीता, पुराण आदि से कर्म-अकर्म, शुभ-अशुभ कर्म, कर्मयोग, कर्म-बंधन आदि की व्याख्या की है। उदाहरण के लिए कर्म-बंधन प्रकरण में राग एवं द्वेष से मुक्त 'क्रिया' कर्म कहलाती है। अतएव कर्म मन द्वारा होता है, इंद्रियाँ केवल माध्यम है। हाथ-पैर के बिना भी, अगर मन द्वारा कुछ भी अच्छा-बुरा सोचा तो वह भी कर्म है।

ज्योतिष एक दैवी विज्ञान है, जिससे भविष्य में झांकने में हमें सहायता मिलती है। वैदिक ज्योतिष (जिसे हिंदू ज्योतिष प्रणाली के नाम से जाना जाता है) हस्तरेखा, प्रश्न, वर्षफल आदि सभी मानव कल्याण के लिए उपयोगी है क्योंकि वह मानव का मार्गदर्शन करते हैं।

ज्योतिष शास्त्र पिछले जन्मों में जातक द्वारा किए गए कर्मों के फल का एक चित्र झलकता है। कर्म तीन प्रकार के होते हैं-

1.संचित कर्म

2.प्रारब्ध कर्म

3.क्रियमान या आगामी कर्म

1. संचित कर्म :- संचित का अर्थ है 'एकत्रित, संचय या इकट्ठा किया हुआ।' इस प्रकार 'संचित कर्म' का अर्थ है – कर्म जो एकत्रित है, संचय किए हुए कर्म या इकट्ठा किया हुआ कर्म। अतएव संचित कर्म अर्थात् अनेक पूर्व जन्मों से लेकर वर्तमान में किए गए कर्मों के संचय को संचित कर्म कहते हैं। इसे ऐसे भी कहा जा सकता है – "संचित कर्म वे कर्म है जो करोड़ो पिछले जन्मों में किए गए बीज रूप से स्थित कर्म है, वे संचित कर्म हैं"। वे अनन्त है और उनमें नए-नए कर्म जाकर एकत्र होते रहते हैं। यानि कि हमारे ही अनेक जन्मों के पाप और पुण्य कर्मों का संचय संचित कर्म है।

2. प्रारब्ध कर्म :- 'प्रारब्ध' को दूसरे शब्दों में 'भाग्य' कहते हैं। हमारे संचित कर्म में से थोड़ा सा अंक मात्र कर्मों को जो हमें इस जन्म में भोगना है उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं। यानी हमारे ही किए गए पाप-पुण्य कर्मों में से कुछ पाप-पुण्य कर्मों का फल, हमें हर जन्म में भोगना पड़ता है, जिसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं। अर्थात् संचित कर्मों के फल आवंटित होते है इस जन्म के लिए। उदाहरण के लिए :- एक चालक है, सतर्कतापूर्ण गाड़ी चलाता है तथा गाड़ी भी पूर्ण व्यवस्थित स्थिति में रखता है। वह पहाड़ी के ढलान पर सतर्कतापूर्वक जा रहा होता है कि अकस्मात् भूस्खलन (Landslide) के कारण सड़क टूट जाती है और एक दुर्घटना हो जाती है। यहाँ भूस्खलन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था अतः यह उसका प्रारब्ध था।

3. क्रियमाण कर्म या आगामी कर्म :- इसका अर्थ 'वह जो किया जा रहा है अथवा वह जो हो रहा है।' इसका मतलब वह कर्म जो वर्तमान में किए जा रहे हैं उनकों "क्रियमाण कर्म" कहते हैं। यानी वर्तमान में होने वाले प्रत्येक पाप और पूण्य कर्मों को 'क्रियमाण कर्म' कहते हैं।

अतएव जिसे हम क्रियमाण कर्म कहते है वही संचित कर्म में जाकर जमा होता रहता है और उसी संचित कर्म का अंश प्रारब्ध कर्म (भाग्य) के रूप में हमें मिलता है। अतः निष्कर्ष यही है कि जीव क्रियमाण कर्म करने के लिए स्वतंत्र है लेकिन अपने द्वारा किए गए कर्मों का फल भोगने में परतंत्र या पराधीन है।

अतः हम लोगो ने यह भी देखा है कि अनेक लोग निष्ठापूर्ण और पूर्ण ईमानदारी से काम करते हैं तथा उस कर्म के विशेष शुभ फल को प्राप्त करने योग्य होते हैं परंतु उन्हें उसकी प्राप्ति नहीं होती है। ऐसा इसलिए होता है कि इस जन्म में जातक को प्राप्त दशाक्रम और गोचर स्थिति उसके प्रतिकुल होता है। दूसरी ओर ऐसा भी देखा गया है कि जो जातक कम निष्ठावान होता है और शुभ फल प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखता है फिर भी उसे शुभ फल की प्राप्ति हो जाती है। इसका कारण उन शुभ ग्रहों की दशा होती है। वह उसके अनुकूल होती है, जो उसे (जातक को) सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। यह उसके दशाक्रम और गोचर की स्थिति पर निर्भर करता है। अतः इन सबकी विवेचना ज्योतिष के माध्यम से ही संभव हो पाती है।

'छठ पूजा'हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्यौहार है। यह त्यौहार हिन्दू कैलेण्डर के अनुसार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की छठी को मनाया जाता है। यह त्यौहार चार दिन तक चलता है। छठ पूजा मुख्य रूप से बिहार एवं उत्तर प्रदेश तथा भारत के अन्य भागों में मनायी जाती है। यह त्यौहार पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, असम और मॉरिशस व नेपाल में भी मनाया जाता है।

लड़के

अंकित कुमार मल्लिक
डाटा एंट्री आपरेटर, प्रशासन

खुद ही खुद में मरते लड़के !
पर उफ़्फ़ तक न करते लड़के !
सपने ऊंचे पाले लड़के !
बुनते मकड़ी जाले लड़के !
घर से दूर हैं, माँ भी नही है !
कौन कहेगा 'खा ले लड़के' !
पापा माँ से डरते लड़के !
बनते और बिगड़ते लड़के !
सिचुएशन को देख के घर की
ख़ाहिश तुरंत बदलते लड़के !
सपने बुनते रहते लड़के !
सबकी सुनते रहते लड़के !
परियों तुम्हारे इश्क़ में पड़ कर
देखे हमने संवरते लड़के !
किस्मत से भी लड़ते लड़के !
नही किसी से डरते लड़के !
घरवालों की खुशी की खातिर
देखो क्या क्या करते लड़के !
याद भी घर की पाले लड़के !
हर मुश्किल में ढाले लड़के !
लेकिन हमने ये भी देखा
कैसे हिम्मत हारे लड़के !
फिरते मारे-मारे लड़के !
इश्क़ में भी वो हारे लड़के !
सपनों को उम्मीद बना कर
चलते वो बेचारे लड़के !
देखे हम कुछ हट के लड़के !
अपने लक्ष्य से भटके लड़के !
हार बड़ी ही जल्दी मानी
फिर पंखे से लटके लड़के !

खुद ही खुद में सच्चे लड़के !
दिल के अब तक बच्चे लड़के !
मेहनत करते हैं इस खातिर
पापा कह दे 'अच्छे लड़के'
दिन भर सोते रहते लड़के !
रात को उल्लू रहते लड़के
मुश्किल चाहे कोई भी हो
अड़ के बैठे रहते लड़के !
सफल हुए और आये लड़के !
अच्छा नाम कमाए लड़के !
पर जिसकी खातिर ये किया था
उसके लिए 'पराए लड़के'
हाँ हाँ इश्क़ में मारे लड़के !
जीता सब पर हारे लड़के !
ग़ैर ले गया उस सपने को
रोते हैं हम प्यारे लड़के !
किस्मत के हाँ तंग हैं लडके !
पूरा नहीं जो छंद है लड़के !
साथ वही अब छोड़ गई है
जो कहती थी 'संग हैं लड़के'
हाँ तो इश्क़ में 'छूटे लड़के'
खुद ही खुद से रूठे लड़के !
मां पापा की खुशी में खुश हैं
ये अंदर से टूटे लड़के !
हार नही हैं माने लड़के !
नया करेंगे ठाने लड़के
हम जमाने से नहीं बने हैं ..
हमसे बने जमाने लड़के !

युगबोध

सुमन कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/डीबीसी
सीटीपीएस

थकना मना है तब तक,
मंजिल नहीं तुम पाते हो।
करो पूरा सपना जिसे तुम,
यूं ही हमेशा गुनगुनाते हो।
जीत तेरी पग पर खड़ी है,
मंजिल के सामने खड़े हो।
करो कामयाबी का आलिंगन जिसकी कल्पना में,
मुस्कुराते हो।
नहीं चमकता सोना कभी भी,
जब तक आग में तपती ना हो।
तेरी भी कुछ पहचान नहीं,
जब तक मंजिल मिली ना हो।
जीवन के इस राह पर,
सफल राही का मनन करो।
समेट इच्छाशक्ति को,
इस राह पर चरण धरो।
मंजिल के कठिन राह पर,
उसने भी कुछ खोया था।
खाकर ठोकर से गिरकर,
वह भी तो रोया था।
दृढ़ संकल्प ही था जिसने,
मंजिल की ओर अग्रसारित किया।
मेहनत लगन की ताकत से ही
उसने विजय का वरन किया।

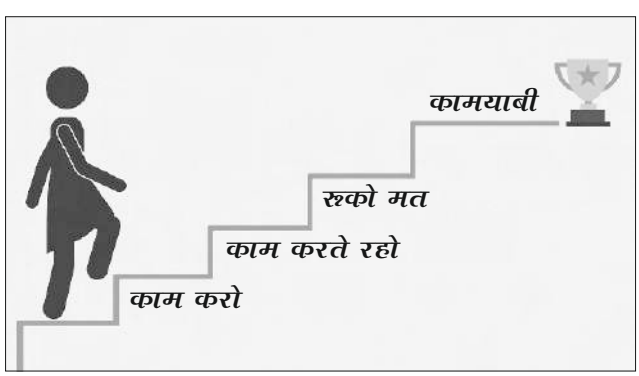

मोबाईल : एक साथी

राजीव दास
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक / प्रशा.

जीवन साथी हो तुम, या हो जीवन तुम,
पहले दूर-दूर थे, अब इतने पास हो तुम,
हर पल, हर वक्त बस तुम ही तुम हो,
ना खाने का होश, ना सोने का इंतजार,
जब-जब खोलूँ आँखें, बस चांहू देखना तुम्हें...
अब सारे रिश्ते दूर हो गए, बस तुम अपने से लगते हो।
तुम्ही हो जीवन साथी मेरे,
क्योंकि,
हर वक्त, सोते — जागते, हंसते- खेलते,
खाते-पीते यहाँ तक की बिस्तर पर भी,
तुम साथ होते हो।
अगर तुम न हो पास तो नींद नहीं आती है,
रातों को उठ-उठ कर तुम्हें देखना अच्छा लगता है,
तुम्हीं तो हो जीवन साथी मेरे,
क्योंकि,
सही मायने में मेरे हर सुख - दुःख में साथ होते हो,
जब-जब मैं होता मुसिबत में मुझे सुलझाते हो,
करते हो पल भर में मेरी सारी समस्याएं दूर,
सुबह के अलार्म से लेकर रात के गुड नाईट तक,
बस तुम ही तुम हो।
ऑफिस से लेकर घर तक, बस तुम ही तुम हो।
आज के जीवन की जरूरत तुम हो,
मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग तुम हो,
क्या इसलिए तुम मेरे जीवन साथी हो ?

जबकि जानती हूँ

नुपूर साव
कनि. हि. अनु. / प्रशा.

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ,
कि हम दोनों
एक राह के पथिक भी तो नहीं हो सकते
पांवों की जमीन के एक होते हुए भी !

तुम्हारे रक्त का कम्पन
जमीन से होता हुआ
छू रहा है मेरे पाँवों को
मेरे हृदय का स्पन्दन
पहुँचता है तुम तक उसी तरह।

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ,
कि हम दोनों की उड़ान
एक ही दिशा की नहीं हो सकती
हमारे ऊपर के आकाश के एक होते हुए भी !

तुम्हारी चाह का कम्पन
आकाश से होता हआ
छू रहा है मेरी चाह को
मेरी चाह की उड़ान
पहुँचती है तुम तक उसी तरह।

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ,
कि हम दोनों की साँस
एक नहीं हो सकती
हमारे चारों ओर डोलती हवा के एक होते हुए भी !

तुम्हारी साँस की आग हवा में फैलती हुई
छू रही है मुझे
मेरी साँस की ताप
पहुंचता है तुम तक उसी तरह।

धरती, आकाश और हवा के एक होते हुए भी
अपनी अपनी आग लिए
हम दोनों एक दुसरे के सम्मुख
एक दूसरे को पहचानते
अपनी सीमाओं में बद्ध
क्यों होना चाहते है असीम ?

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ,
कि यह सब सोचना
अन्ततः सोचना ही रह जाएगा !

धर्म आध्यात्मिकता और मानव जीवन

तुलसी प्रसाद क्रौंच
लेखापरीक्षक
डी वी सी मुख्यालय

बंधुओं मैंने जो विषय चुना है, वह आज के भागम भाग की जीवन शैली वाले लोगों के लिए नीरस हो सकता है फिर भी मैं इस पर प्रकाश डालना अपना आवश्यक कर्तव्य समझता हूं।

मैं इस विषय की शुरुआत दो प्रश्नों के साथ करना चाहूंगा एक यह कि

1. क्या ईश्वर होता है? और दूसरा

2 क्या मानव शरीर सिर्फ एक शरीर है या उसमें आत्मा रूपी और अविनाश ऊर्जा भी होती है?

आप सब जानते हैं कि इन दो प्रश्नों के उत्तर में पूरी मानव जाति दो भागों में बांट जाएगी। एक वह लोग होंगे जो कहेंगे ईश्वर होते हैं जो सदा हमारे शरीर में आत्मा रूपी ऊर्जा भी है। जिन्हें हम आस्तिक भी कहते हैं। दूसरे वह लोग होंगे जो कहेंगे कि ईश्वर नहीं होता है। जो भी है वह हमारा शरीर और जीवन है। ईश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं।

मेरे विचार में इस बार रात में दोनों ही होते हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते पर महसूस अवश्य ही कर सकते हैं। जिसके लिए योगाभ्यास आवश्यक है। योग को हम आत्मा और परमात्मा का मेल अथवा जोड़ भी कह सकते हैं। मैं ऐसा पूरे आत्मविश्वास के साथ कह सकता हूं, क्योंकि जरा सोचिए हम सब उन्हें कभी हवा को देखा है, कभी अपने मुट्ठी में पकड़ा है, उत्तर होगा नहीं। फिर भी हम सभी उसे महसूस करते हैं तथा उस हवा से हमारा अटूट रिश्ता बना रहता है। इसी प्रकार हम सब समय को ना तो देख सकते हैं ना उसे छू सकते हैं, ना ही उसे रोक सकते हैं, फिर भी समय को महसूस कर सकते हैं, पर वह हमसे सर पर जुड़ा हुआ है। ठीक उसी प्रकार हम ईश्वर को देख नहीं सकते उसे छू नहीं सकते पर योग है अभ्यास से उसे हम आसानी से महसूस कर सकते हैं, उससे जुड़ सकते हैं तथा हमारा उससे अटूट रिश्ता उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक पिता का एक पुत्र के साथ होता है।

धर्म आध्यात्मिकता और मानव जीवन का विषय एक जटिल एवं बेहद विस्तृत विषय है, जिस पर जितना भी लिखा गया है वह बोला जाए वह सभी कम पड़ेंगे फिर भी मैं अपने विषय पर क्रमशः संक्षिप्त प्रकाश डालना चाहूंगा।

1. धर्मः एक धर्म एक पंथ में बटा हुआ है और संप्रदायिक हिंसा एवं घृणा फैलाने में लगा हुआ है, जबकि धर्म अलग-अलग और अनेक नहीं है। धर्म का एकमात्र लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है तथा सभी धर्मों में सर्वश्रेष्ठ मानवता का धर्म होता है। हिंसा घृणा एवं नफरत के लिए कोई स्थान नहीं होता।

2. आध्यात्मिकताः आध्यात्मिकता बड़ी चीज है परंतु लोग इसे हल्के में लेते हैं तथा से फल प्राप्ति की आशा रखते हैं, कुछ लोग तो उसके साथ बाहरी दिखावे एवं आडंबर एवं धार्मिक कर्मकांड को एक साथ जोड़ कर इसका धड़ल्ले से व्यापार भी कर रहे हैं।

मेरा ऐसा मानना है कि जब तक आप अपने को सिर्फ एक शरीर मानेंगे और अपने को एक आत्मा के रूप में स्वीकार नहीं करते आप वास्तव में आध्यात्मिकता से जुड़ ही नहीं सकते हैं तथा उसकी आध्यात्मिक उन्नति हो ही नहीं सकती।

शारीरिक चेतन एवं दिखावे की आध्यात्मिकता के साथ आप संप्रदायिक कट्टरपंथी तथा मानव मानव के बीच भेदभाव करने वाले व्यक्ति बन सकते हैं।

3. मानव जीवनः मित्रों मानव जीवन धर्म आध्यात्मिकता के बिना अधूरी है तथा कुछ हद तक पशुओं के जीवन के समान ही है क्योंकि हम इस क्षणभंगुर एवं भोग विलास वाले सांसारिक जीवन में कोई भी और कितनी विनती कर ले वह स्थाई नहीं हो सकता, ना ही इस संसार के बाद हमारे साथ जा सकता है। इसलिए मानव जीवन में असली उन्नति आध्यात्मिकता उन्नति के

साथ साथ जीवन मरण के चक्र से छुटकारा पाना अथवा मुक्ति पाना है, ताकि हम ईश्वर के नजदीक पहुंच सके तथा उस में लीन हो सक।

अंत में मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि परमात्मा ही हम सबों का अध्यात्मिक अथवा आस्तिक पिता है है तथा हम सभी उसके संतान है क्योंकि इस पृथ्वी पर सभी रिश्ते सांसारिक हैं जो क्षणिक है पहले भी नहीं थे तथा कुछ वर्षों के बाद भी नहीं रहेंगे तथा हमारा अपना शरीर भी पहले नहीं था अब कुछ वर्षों के बाद भी नहीं होगा लेकिन अविनाशी आत्मा हमेशा रहेगी।

इसलिए ईश्वर से योग द्वारा जोड़ना ही सच्चे और अटूट रिश्ते से जुड़ना है योग द्वारा ही हम अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं तथा ईश्वर प्राप्ति की ओर बढ़ सकते हैं यह मेरे निजी विचार है तथा और समस्त मित्रों से मिले सुझाव एवं संवाद का सदैव स्वागत है।

कोरोना कोरोना

जितेन्द्र कुमार
डाटा एंट्री आपरेटर (ग्रेड-बी)
आवासीय लेखापरीक्षा कार्यालय
चंद्रपुरा

कोरोना कहाँ से आए कोरोना।
किसी को भी न तू भाए कोरोना।।
सूनी गलियाँ, सूनी सड़के।
आँखो में अब सपने है मरते।।
इंतजार है कुछ बनने का।
इंतजार है अपने साजन का।।
बच्चे तरसे मैदानों में शोर मचाने को।
बड़े तरसे साथ अपनों का।।
क्यों तूने हैं दूरी बढ़ाई।
अब तो आए समय गले लगाने का।।
तू जा कोरोना, तू जा कोरोना।
किसी को भी न तू भाए कोरोना।।

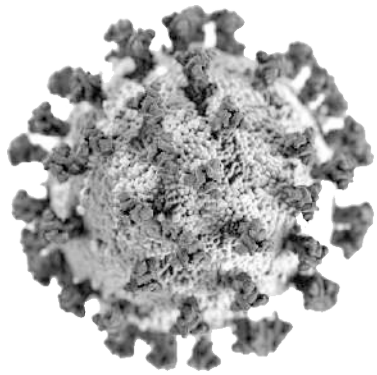

सैनीटाइज़र

संगीता दोलाई
वरि. लेखापरीक्षक/प्रशा

सैनीटाइज़र ले लो भाई सैनीटाइज़र,
करलो अपने हाथों को जीवाणु मुक्त,
लड़ना है हम सबको मिलके,
वाईरस के विरुद्ध ये युद्घ...

मन में सोच रही थी,
काश मिलता एक ऐसा सैनीटाइज़र,
सैनीटाइज्ड कर लेती अपने समस्याओं को,
तब मिलती खुशियां अपार..

मेरी सोच प्रभु ने सुन ली,
किए बड़े उपकार,
हंसकर बोले, लेले मेरा नाम
यही है सबसे बड़ा सैनीटाइज़र... !!!

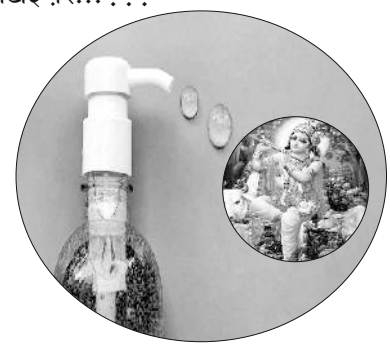

शिक्षक दिवस की महत्ता

सुमन कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
चंद्रपुरा

भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों एवं समुदाय के लोग अपने-अपने तरीकों से पर्वों एवं त्यौहारों को मानते आ रहे हैं लेकिन स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा गांधी जयंती जैसे पर्वो को भारत के सभी संप्रदाय के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं, इसलिए इसे राष्ट्र पर्व भी कहते हैं। और इसी तरह शिक्षक दिवस को भी राष्ट्र के तमाम धर्मों एवं समुदाय के लोग मिलकर एक साथ मनाते आ रहे हैं।

शिक्षक दिवस की शुरुआत भारत के उपराष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन मैनन की जन्म तिथि 5 सितंबर को चुना गया क्योंकि वे उपराष्ट्रपति के साथ-साथ एक कुशल शिक्षक और एक कुशल शिक्षाविद थे। और इसकी शुरुआत 5 सितंबर 1962 से की गई। यूं तो ऐतिहासिक काल से ही भारतीय समाज में गुरु अर्थात शिक्षकों का स्थान पूजनीय रहा है और इसलिए गुरु को पूज्य देव से भी ऊपर मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। और कहा गया है कि गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय,बलिहारी गुरु आपने जो गोविंद दियो बताएं, और यह सही है कि जब हमारी समझ कम होती है, जब हमारे सामने अंधकार होता है तब गुरु अर्थात शिक्षक ही हमें प्रकाश की ओर अग्रसर कर एक कुशल नागरिक तथा एक अच्छा इंसान बनाता है। और इसलिए सदियों से गुरु जन पूजनीय हैं। एकलव्य और उनके गुरु को छोड़ दे तो प्राचीन काल से ही हमारे समाज में गुरु शिष्य का संबंध उच्च कोटि का रहा है। शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना उनकी सेवा करना छात्र अपना कर्तव्य समझते हैं। राष्ट्र एवं सामाजिक विकास में हमारे पूज्य शिक्षकों की अहम भूमिका होती है क्योंकि इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, डॉक्टर तथा देश सेवा में लगे तमाम लोगों को शिक्षक ही तैयार करते हैं परंतु दुख इस बात की है कि जो सम्मान और सुविचार उन्हें मिलना चाहिए जिसके वह हकदार हैं उन्हें नहीं दिया जाता है। शिक्षक हमारे राष्ट्र निर्माता हैं और इसलिए शिक्षक दिवस के इस पुनीत अवसर पर देश के तमाम शिक्षकों को आदर के साथ नमन करता हूं।

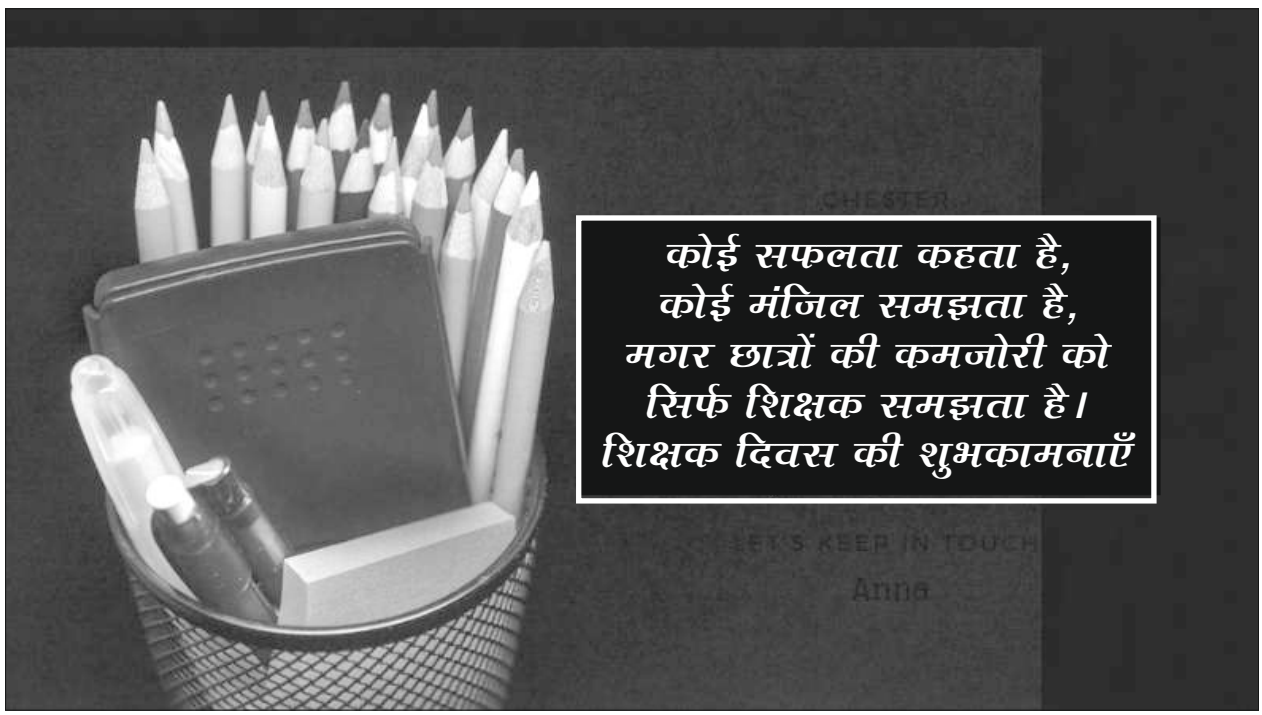

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1
1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1
कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1 का कार्यालय
हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1
द्वारा आयोजित

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1 का कार्यालय
हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1
1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

तथा पदेन सदस्य,लेखा-परीक्षा बोर्ड-1
1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1
सितम्बर, 2019 तक

1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता- 1

नयन रंजन पाल
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2019 के समापन समारोह पर आयोजित कार्यक्रम

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला 2019 के दौरान महानिदेशक सुपर्णा देब,उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ए.डब्लू.लैंगस्टे एवं प्रशिक्षक नवीन प्रजापति

Designed & Printed at **M/s.SANA KHURANA** (A Print House of Digital Prints) - Mob:9339764686